'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (CIF) - 3.452, (SJIF) – 3.009, (GIF) –0.676 (2013)
Special Issue 33 : समकालीन हिंदी नाटक विधा में बदलते जीवनमूल्य
UGC Approved No. 40705 & 44117
ISSN : 2348-7143
January 2018

"आखिर ये प्यार होता है क्या?" नाटक में मनोवैज्ञानिकता

डॉ. कैप्टन बाबासाहेब माने
श्री शिव छत्रपति महाविद्यालय,
जुन्नर, जि. पुणे।

समकालीन नाटककारों में **'मृदुला बिहारी'** प्रतिभावान फिल्म कथाकार एवं नाटककार के रुप में विशिष्ट स्थान रखती हैं। उन्होंने अनेक फिल्म कथाएं और लगभग चालीस से अधिक रेडियो, दूरदर्शन, मंचीय तथा फिल्म नाटकों की रचना की है। प्रस्तुत नाटक **'आखिर ये प्यार होता है क्या?'** एक फिल्म नाटक है। इसका प्रकाशन सन् २००० में नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, जयपुर से हुआ है। प्रस्तुत नाटक के शीर्षक से ही ज्ञात होता है कि इसमें प्यार के संदर्भ में चर्चा की गई है। लेखिका ने कुछ वास्तविकता और कुछ कल्पना का सहारा लेकर इस नाटक को मूर्त रुप दिया है। इसकी कथावस्तु **'बरखा'** नामक युवती से आरंभ होती है और उसके ही इर्द–गिर्द घूमती है। **बरखा** एक मध्यम वर्गीय परिवार की लडकी है और वह अपने माता–पिता के साथ मुंबई में रहती है। मध्यम वर्गीय होने के बावजूद भी उसके मन में उच्च वर्गीय लोगों की तरह जीने एवं प्रदर्शन करने की लालसा कुट–कुटकर भरी हुई है। वह जिन सहेलियों के साथ कॉलेज में पढ़ती हैं, उनमें से कई सहेलियां अमीर खानदान से हैं और जवान तथा खूबसूरत हैं। कॉलेज का अंतिम दिन है। बरखा और उसकी सहेलियां आपस में छुट्टियां मनाने की योजनाओं पर बातें कर रही हैं। बरखा पर अपने आस–पास के उच्च स्तरीय माहौल और अमीर सहेलियों का प्रभाव कुछ ज्यादा ही पड़ा हुआ है। अत: वह हर समय स्वयं को अमीर दिखाने की चेष्टा करती नजर आती है। इसके लिए वह निरंतर झूठ का सहारा लेती है। इसके अतिरिक्त उसके युवा मन में प्यार से संबंधित भाव भी सतत उमडते रहते हैं। उन भावों वह को हमेशा शेर–शायरी के माध्यम से व्यक्त करती है। कॉलेज के अंतिम दिन में चल रही लडकियों की बातचीत से ही लेखिका ने नाटक का आरंभ किया है। इस बातचीत के द्वारा लड़कियों के मनों एवं स्वभावों को लेखिका ने यूं उजागर किया है–

एक लड़की – सपना! आजकल तुम अपने ब्वॉय फ्रेंड के साथ ज्यादा ही समय गुजारती हो ।
दूसरी लडकी – अगर तेरा ब्वॉय फ्रेंड घर वालों को पसंद न आया तो ?''१

उक्त बातचीत के द्वारा लेखिका ने आम तौर पर लडकियों की अलग–अलग किस्मों की मानसिकताओं को उकेरकर हमारे सामने रखा है। समकालीन समाज में सपना जैसी अनेक लड़कियां हैं, जो अपने ब्वॉय फ्रेंड के साथ प्यार में बंधी हुई हैं, परंतु माता–पिता की इच्छा के विरुद्ध जाना नहीं चाहती। दूसरी बरखा जैसी लड़कियां हैं, जो कि अपने प्यार को माता–पिता के समक्ष व्यक्त करने के लिए साहस जुटाने की बात करती हैं। तीसरी वें लड़कियां हैं, जों थोड़ी–सी नकारात्मक विचारों की–सी लगती हैं। इन लड़कियों की प्यार करने की मंशा तो है, परंतु अपने मॉ–बाप से डरती हैं। इस तरह से लेखिका ने मानसशास्त्रीय तरीके से भिन्न–भिन्न युवतियों के मनों को विविधताओं को खोलने का प्रयास किया है। बरखा की सहेली आलिया उच्च खानदान से है। उसके माता–पिता एवं परिवार के पास अरबों रुपयों की संपत्ति है। परिणामस्वरुप उसके पास अनेक तरह की सुख–सुविधाएं उपलब्ध हैं। बरखा और उसकी सहेलियां जब आपस में बातें करने लगी थी, उसी समय आलिया वहां पहुंच जाती है और बरखा को अपनी कार में लेकर घर निकलने लगती है। आलिया की कार को देखकर बरखा का भी मन आलिया

जैसी सुख–सुविधाओं को पाने एवं स्वयं को अमीर घोषित करने के लिए उतावला हो जाता है। इसका पता दोनों के बीच चल रही निम्न बातचीत से चलता है।

बरखा आलिया से – इस छुट्टी में क्या कर रही हो ?

आलिया – अपने चार्टर्ड प्लेन से हम न्यूयार्क जा रहे हैं ।

बरखा – वंडरफुल ! लास्ट ईयर मैं भी गई थी । मैं वहां के स्काय स्क्रेपर्स से बहुत इंप्रेस्ड हूं ।

आलिया – कौनसा? वर्ल्ड ट्रेड सेंटर या हैल्थ एंड रैकेट क्लब?

बरखा – ..... ए.... वर्ल्ड ट्रेड सेंटर!" [२]

उक्त कथन में बरखा द्वारा कहा गया अंतिम वाक्य झूठेपन से युक्त है, उसमें निहित झूठापन मनोविज्ञान का ज्ञाता तुरंत पकड सकता है। इस वाक्य में बरखा के मन का संभ्रम उजागर होता है। उसने कभी वर्ल्ड ट्रेड सेंटर या हैल्थ एडं रैकेट क्लब की सैर नहीं की है। अत: वह आत्मविश्वास के साथ कहने में हड़बड़ाती है और अपनी असलियत का पता आलिया के सामने उजागर न हो, इसलिए आलिया के ही द्वारा कहे स्थानों में से एक स्थान का नाम हकलाहट भरे स्वर में उच्चारती है। यानी बरखा अपनी मध्यमवर्गीय अभावग्रस्त जिंदगी को छिपा रही है। उस पर अमीरी का प्रभाव कुछ ज्यादा ही है। उसका मन मध्यमवर्गीय जीवन की खामियों को आलिया के सामने जाहिर नहीं करना चाहता। इसलिए वह झूठ का सहारा लेती है। इस पर जब मनोवैज्ञानिक दृष्टि से विचार किया जाए तो कहा जा सकता है कि मनुष्य जिन परिस्थितियों में रहता है, जिन लोगों को अपने आस–पास के माहौल में देखता है। उनके रहन–सहन, ऐशो–आराम और व्यवहारों का प्रभाव उसके मानस पर निश्चित रुप से पडता है। अत: वह अपने–आप को उसी प्रकार से दिखाना चाहता है, जिस तरह से आस–पास में लोग रहते हैं। वह अपनी कमजोरी को निरंतर छुपाने की कोशिश करता है। जैसे कि उक्त कथन में बरखा अपनी कमजोरी छुपाते हुए झूठ बोल रही है।

बरखा की नानी नारायणी ऊटी में देवेश पुरोहित की पुरोहित मेन्शन नामक कोठी में हाऊसकीपर है। इस बार उसने बरखा और उसकी बहन बुलबुल को छुट्टियां मनाने के लिए ऊटी बुलाया है। बुलबुल तो नहीं आती, केवल बरखा ही ऊटी आ जाती है। बरखा खूबसूरत है, अमीर लड़कियों की तरह पोशाक धारण करने का उसे शौक है। उसका चाल–चलन भी अमीर लड़कियों की तरह ही है। उसके बातचीत का लहजा एवं सोच भी अमीरों की तरह ही है। इन्हीं कारणों से जो कोई उसे पहली बार देखता है, अमीर खानदान की ही लडकी समझने की भूल करता है। फरहाद इस नाटक का एक अन्य पात्र है। वह भी बरखा को देखने के बाद अमीर घर की ही लडकी समझने की भूल करता है। इसी चलते वह बरखा का अपहरण करना चाहता है। चूंकि उसे अपनी प्रेमिका हसीना के साथ शादी करनी है। हसीना की मौसी और भाईयों ने हसीना के साथ शादी करने के लिए फरहाद से पचास हजार रुपये की मांग की थी। वह इस मांग को पुरा नहीं कर पा रहा था। इसलिए वह बरखा का अपहरण करके उसके पिता से पैसे ऐंठना चाहता है। अत: वह उसका पीछा करते–करते ऊटी तक पहुंच जाता है। मुंबई से ऊटी आने के पहले फरहाद अपने दोस्त नत्थू को अपने सभी इरादे बता देता है। फरहाद के इरादों को निम्न संवादों में देखा जा सकता है–

फरहाद नत्थू से – वैसे अब सबको उलझाना ही मेरा काम है। मैं किडनैपिंग का धंधा करुंगा.....

नत्थू – (डरकर) यानी अपहरण !

फरहाद– किसी अरबपति की बेटी को किडनैप करके सत्तर हजार फिरौती मांगूंगा ।

नत्थू – ७० हजार की क्यों ?————

फरहाद – क्राइम बहुत बढ़ गया है। पुलिस का सारा टाइम तफतीश में गुजर जाता है, मेरे वास्ते टाइम कहां होगा...? (तब तक फरहाद की नजर बरखा पडती है।)....ये तो बड़े पैसे वाली मालूम होती है।.... उस पर अकेली।" [४]

उक्त बातचीत से साफ है कि मनुष्य के सामने जिस तरह की परिस्थितियां उत्पन्न होती हैं। उनके अनुसार उसका मन भी बदलता रहता है। उसकी क्रिया–प्रतिक्रियाएं भी बदलती हैं। फरहाद एक अच्छा–खासा लड़का था। एक मार्केटिंग कंपनी में काम करता था। वह अपनी जिंदगी ईमानदारी से गुजार रहा था। वह अपनी प्रेमिका हसीना के साथ शादी करना चाहता था। परंतु हसीना के घर वालों के द्वारा मांगे गए पचास हजार रुपये की वजह से उसकी मानसिकता बदल जाती है। अत: वह इस मांग को पुरा करने हेतु किडनैपिंग जैसे बुरे रास्ते पर निकल पडता है। उक्त संवादों से दूसरा एक तथ्य यह सामने आता है कि नत्थू जब फरहाद को कहता है कि अगर किडनैपिंग करते समय तू पकड़ा गया तो ? इस पर फरहाद को कोई अधिक चिंता नहीं होती। क्योंकि उसने देख लिया है कि हमारी पुलिस यंत्रणा किस तरह उलझी हुई है ? कानून व्यवस्था कितनी लचर–पचर हो चुकी है? इसलिए वह अपने पकड़े जाने से डरता नहीं है। यहां पर फरहाद के मन की निश्चिंतता दिखाई देती है। तीसरी बात यह है उसके मन में केवल हसीना के साथ शादी करके घर बसाने के विचार हैं। हसीना के लिए वह कुछ भी करने को तैयार है। अत: यहां फरहाद के मन में निहित हसीना के प्रति जो प्यार है, उसके दर्शन होते हैं। फरहाद के मन के इन विविध रुपों को जानने के लिए हमें फ्रयाड के मनोविश्लेषणात्मक विचारों को देखना आवश्यक है। फ्रयाड ने मनुष्य के मन के तीन हिस्से किए हैं। जिनमें चेतन, अवचेन और अचेतन आदि समाहित हैं। इनमें से फरहाद के अचेतन मन में हसीना के साथ शादी करने की अतृप्त इच्छा दबी हुई है। उस इच्छा का दमन हसीना के परिवार वालों से हो रहा है। उसकी यह अतृप्त इच्छा उसके अचेतन मन से होती हुई अवचेतन के द्वारा चेतन मन को भारी मात्रा में प्रभावित कर रही है। इसी प्रभाव के चलते फरहाद का चेतन मन अच्छाई से बुराई की ओर निकल पड़ता है।

बरखा ऊटी आई है, उसका पीछा करते–करते फरहाद भी पहुंचा है। फरहाद का मन बरखा के प्रति थोड़ा–सा सशंकित है। वह बरखा को अमीर घर की मानने के लिए पूर्णत: तैयार नहीं है। परंतु बरखा जब ऊटी रेल स्टेशन से अपनी नानी नारायणी देवी और नौकरानी चम्पा के साथ एक बड़ी–सी कार में बैठकर पुरोहित मेन्शन निकलती है। तब उसके मन की शंका दूर हो जाती है और उसे पक्का यकीन होता है कि बरखा सचमुच ही एक अमीर खानदान की लड़की है। अत: वह उसका पीछा करते–करते पुरोहित मेन्शन तक पहुंचता है। यहां पर लेखिका ने फरहाद के निरंतर परिवर्तनशील मन को बड़े ही प्रभावी ढ़ंग से उजागर किया है। पुरोहित मेन्शन में जाने के बाद नानी और चम्पा बरखा का अच्छा–सा स्वागत करते हैं। उनमें कई बातें हो जाती हैं। रात का समय है, बरखा अपनी नानी के साथ सो रही है। परंतु उसका मन बार–बार अमीर पति की कामना कर रहा है और स्वयं को राजकुमारी की तरह घोषित करने के लिए भी उतावला हो रहा है। अत: वह नानी से राजकुमारी वाली कहानी सुनाने का आग्रह करती है, जो बचपन में उसने इसी नानी से सुनी थी। बरखा के आग्रह पर नानी कहानी सुनाने लगती है और कहानी सुनते–सुनते बरखा गहरी नींद में खो जाती है। सपने में बरखा राजकुमार के साथ गाना गाती है। सपना चल रहा है, सुबह हो गई है और नानी उसके सपने के बीच में ही उसे जगाती है। उसका सपना अधूरा ही रहता है। ऐसे सपनों के संदर्भ में मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि अचेतन मन में पड़ी अतृप्त इच्छाएं, अभिलाषाएं

और कामनाएं अवचेतन के द्वारा सपनों के माध्यम से तृप्त होती हैं। इसलिए अधिकतर सपने रात के अंत में आते हैं। इस संदर्भ में **डॉ. एस. एस. माथुर** बताते हैं कि **"हमें स्वप्न भी अचेतन मन के कारण ही आते हैं। बहुधा स्वप्न में हमारी अतृप्त अभिलाषाओं, इच्छाओं और कामनाओं की तृप्ति की चेष्टा की जाती है। ये अभिलाषाएं हमारे अचेतन मन में ही संचित रहती हैं। अतएव स्वप्न का होना भी अचेतन मन के अस्तित्व को सिद्ध करता है।"**[५] दूसरी एक जगह पर उन्होंने बताया है कि **"स्वप्न द्वारा हम अपनी इच्छापूर्ति का प्रयास करते हैं। हमारी जो इच्छाएं, कामनाएं, प्रेरणाएं आदि दमन कर दी जाती हैं, स्वप्न के रुप में प्रकट होने की चेष्टा करती हैं।"**[६] उक्त दोनों कथनों से स्पष्ट है कि बरखा की अमीर होने की कामना का दमन उसके मध्यमवर्गीय परिवार के कारण हुआ है। उसका मन राजकुमार की तरह पति पाने के लिए इच्छुक है। अभी तक उसकी यह इच्छा पूरी नहीं हुई हैं। परिणाम स्वरुप उसकी उक्त कामना और इच्छा उसके मन को बार–बार प्रभावित कर रही है। इसीलिए वें स्वप्न के माध्यम से मूर्त होती हैं।

दूसरे दिन बरखा तैयार होकर पुरोहित मेंन्शन के बाहर टहल रही है। उसी समय गौतम वहां से कार ड्राइव करते गुजर रहा है। उसकी नजर बरखा पर पडती है। वह भी बरखा को पुरोहित मेन्शन के मालिक की ही बेटी समझ बैठता है। अत: लिफ्ट देने के बहाने उसे अपनी कार में बिठा लेता है और दोनों निकलने लगते हैं। उसी समय उनकी कार में पीछे से फरहाद भी बैठ जाता है। यहां पर फरहाद का यूं चुपके से उसी कार में बैठना थोडा–सा अटपटा लगता है। क्योंकि गौतम और बरखा के होते हुए फरहाद उसी कार में पीछे कैसे बैठ सकता है ? बैठते समय थोड़ी–सी तो आहट हुई होगी ? फिर भी लेखिका ने उसे बिठा दिया है। बरखा और गौतम दोनों इस बात से बेखबर हैं। दोनों की आपसी बातें शुरु होती हैं। पीछे से फरहाद उनकी बातें सुनने लगा है। जिस तरह से बरखा को कोठी के सामने टहलता हुआ देखकर गौतम उसे अमीर घर की लड़की समझने की भूल कर बैठता है, उसी तरह से बरखा भी गौतम की कार को देखकर उसे अमीर खानदान का ही समझने की भूल करती है। अत: दोनों एक–दूसरे को अपनी असलियत छुपाते हुए झूठे नामों से परिचित होते हैं। बरखा अपना नाम रुबीना बताती है और गौतम अपना नाम अंबर बताता है। इसी नकलीपन से दोनों का प्यार परवान चढ़ने लगता है। दोनों की असलियत तब खुलती है, जब उसी इलाके का गुंडा दुर्जनसिंह दोनों का अपहरण करता है। दुर्जनसिंह, फरहाद और अपना चेला माफिया के कहने पर दोनों को अमीर घर के समझकर उनका अपहरण करवाता है। दुर्जनसिंह के अड्डे पर बरखा और गौतम दोनों को बांध दिया जाता है और दुर्जनसिंह, बरखा की ओर मोबाइल बढ़ाते हुए कहने लगता है –

दुर्जन – ... अपने बाप को विलायत फोन कर, उसे बता कि पांच करोड़ देगा तब उसकी लाड़ली छूटेगी...

बरखा – पांच करोड़! मेरा बाप विलायत में नहीं मुंबई में रहता है। उसके पास तो अभी पांच हजार भी नहीं....

दुर्जन – (डांटकर) बन मत। पांच करोड़ मंगा, नहीं तो तेरी जान ले लूंगा।

बरखा– अब तक धोखा दे रही थी, (गौतम और बरखा की आंखे मिलती हैं।) अभी सच कह रही हूं कान पकड़ कर कसम! अब कभी झूठ नहीं बोलूंगी।"[७]

बरखा के इन कथनों में घबराहट है। उसे पुरी तरह से यकीन हुआ है कि अब वह झूठ बोलेगी तो बुरी तरह से फंस जाएगी । इसलिए वह डर के मारे पुरा का पुरा सच दुर्जन को बताती है। इस पर दुर्जन अपने चेले के माध्यम से तहकीकात भी करवाता है और बरखा की बातों को सही पाता है। इसके बाद दुर्जनसिंह गौतम को भी पहचान लेता है। गौतम का भी राज सभी के सामने खुलता है। असल में गौतम

ना ही किसी अमीर घर का लड़का है और ना ही उसके पास अपनी कारें हैं। वह तो राणा रघुवीरसिंह के ड्रायवर का बेटा है। इस घटना के द्वारा दोनों को एक–दूसरे की असलियत का पता चलता है। अत: दोनों का प्यार टूट जाता है। उक्त प्रसंग में पात्रों की असली मनोवृत्तियां खुलकर सामने आती हैं। बरखा और गौतम दोनों ने परस्पर अमीर दिखाने का ढ़ोंग किया था। अब तक वे एक–दूसरे झूठ बोलकर प्यार करने लगे थे। लेकिन जैसे ही दोनों का राज खुलता है, वैसे ही उनका नकली प्यार टूट जाता है। परिणाम स्वरुप बरखा और गौतम की मनोवृत्तियों में परिवर्तन होता है। वे सही रास्ते पर निकल पडते हैं। इधर फरहाद को भी दुर्जन के द्वारा झूठ बोलने की सजा मिलती है। इसकी वजह से उसका भी मन परिवर्तित हो जाता है और नेक रास्ते की ओर मुड़ता है। मनुष्य की इन मनोवृत्तियों के संदर्भ में **डॉ. एस. एस. माथुर** लिखते हैं **"मनोवृत्ति एक आंतरिक दशा है। यह व्यक्ति को किसी कार्य करने या छोड़ने के लिए प्रेरित करती है।"** [८] इस कथन के अनुसार गौतम, बरखा और फरहाद तीनों बुरे मार्ग छोड़कर अच्छे मार्ग की ओर प्रस्थान करते हैं।

इसके बाद बरखा की शादी विवेक के साथ तय हो जाती है। विवेक राणा रघुवीसिंह का इकलौता पोता है। अभी–अभी वह फॉरेन से भारत लौटा है और यहीं पर स्थाई होना चाहता है। वह हृदय से साफ, मानस से विकसित, सहानुभूति रखने वाला, उदारता दिखाने वाला अमीर खानदान का इकलौता वारिस है। अत: दोनों की शादी तय करने के लिए लेखिका ने नाटक की कहानी को नया मोड दिया है। मोड़ यह है कि पुरोहित मेन्शन की इकलौती वारिस सबीना को देखने के लिए विवेक पहुंचा है। क्योंकि विवेक और सबीना दोनों ही अमीर खानदान के हैं। परंतु सबीना विवेक की परख करना चाहती है कि वह सचमुच ही शादी करने के लिए तैयार है या केवल उसकी जायदाद देखकर शादी के लिए राजी हुआ है। अत: वह अपने बदले बरखा को उसके सामने पेश करती है। परंतु विवेक को बरखा पसंद आती है। इसके बाद जब बरखा अपनी असलियत विवेक को बताती है, फिर भी वह उसके साथ शादी करने के लिए तैयार हो जाता है। इससे विवेक की मानसिक योग्यता का विकास कितनी अधिक मात्रा में हुआ है? इसका ज्ञान हमें हो जाता है। मानसिक योग्यता के विकास पर मनोविज्ञान की दृष्टि से विचार किया जाए तो यह कहा जा सकता है कि प्रत्येक मनुष्य की अपनी मानसिक योग्यता का विकास अलग–अलग मात्रा में होता है। किसी का अधिक तो, किसी का कम। किसी की मानसिक योग्यता व्यापक तो, किसी की संकीर्ण होती है। किसी की मानसिक योग्यता में पल–पल बदलाव होता है, किसी में दृढ़ता दिखाई देती है। इस संदर्भ में **डॉ. एस. एस. माथुर** लिखते हैं कि **"बहुत से विद्वानों के अनुसंधानों के आधार पर यह पूर्णत: सिद्ध हो चुका है कि विभिन्न व्यक्तियों की मानसिक योग्यताओं के विकास की गति में अंतर होता है। उनमें विभिन्न मात्राओं में वृद्धि होती है ।"** [९] अत: इस नाटक में लेखिका ने विवेक की मानसिक योग्यता गौतम, फरहाद, बरखा और सबीना की मानसिक योग्यता की अपेक्षा अधिक विकसित दिखाई है। बरखा की शादी विवेक से तय हुई है, परंतु बरखा को गौतम के साथ बिताए हुए पल बार–बार याद आने लगे हैं। इधर गौतम को भी बरखा की यादें सताने लगी है। विवेक और गौतम अच्छे दोस्त हैं। अत: बरखा के घर विवेक के साथ गौतम का आना–जाना भी बढ़ गया है। इसी वजह से उन दोनों का प्यार पुन: परवान चढ़ जाता है। बरखा अपने मन की सभी भावनाएं एक चिट्ठी के द्वारा विवेक के पास पहुंचाती हैं। जब विवेक उसे पढ़ता है तो, उसे सारा माजरा समझ में आ जाता है और वह बरखा और गौतम को आपस में मिला देता है। इधर सबीना को भी विवेक अच्छा लगने लगता है। उसे पुरी तरह से ज्ञात जाता है कि विवेक अमीरी का बोझ लादें नहीं घूम रहा है। उसके पास उदारता है, समझदारी है और वह जायदाद का

लालची नहीं, बल्कि सादगी पसंद लड़का है। अत: इन दोनों में प्यार होता है और दोनों की शादी होती है। इस तरह से लेखिका ने ऊंचे खानदान वालों का रिश्ता ऊंचे खानदान में जोड़ दिया है और मध्यमवर्गीय परिवार का रिश्ता मध्यम वर्ग में ही जोड़ दिया है और नाटक का अंत सुखांत दिखा दिया है।

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि लेखिका ने प्रस्तुत नाटक की कहानी को फलप्राप्ति तक ले जाने के लिए अनेक मोड़ दिए हैं। इन मोडों के माध्यम से भिन्न–भिन्न पात्रों के मन में निहित भिन्न–भिन्न विचारों, भावों, इच्छाओं, आंतरिक वृत्तियों, कल्पनाओं, व्यवहारों, गुणों और क्रिया–प्रतिक्रियाओं को सफलता से रेखांकित किया है। अलग–अलग पात्रों के मनों को विविध दिशाओं में मोड़कर पुन: उन्हें सही रास्तों पर लाने का जो प्रयास किया है, इसी में ही लेखिका की मनोवैज्ञानिक परख छिपी हुई हैं। अत: उन्हें प्रभावशाली मनोविज्ञानवेत्ता कहा जा सकता है।

संदर्भ सूची:

१. आखिर ये प्यार होता है क्या ? – मृदुला बिहारी , पृ. ०१ प्रथम संस्करण – २००० , नेशनल पब्लिशिंग हाउस, जयपुर ।
२. वही, पृ. ०२
३. सामान्य मनोविज्ञान – डॉ. एस. एस. माथुर , पृ. ०५ तेरहवां संस्करण – १९८५, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा ।
४. आखिर ये प्यार होता है क्या ? – मृदुला बिहारी , पृ. ११
५. सामान्य मनोविज्ञान – डॉ. एस. एस. माथुर , पृ. ३८४
६. वही , पृ. ४०८
७. आखिर ये प्यार होता है क्या ? – मृदुला बिहारी , पृ. ३७
८. सामान्य मनोविज्ञान – डॉ. एस. एस. माथुर, पृ. १६८
९. वही, पृ.१२७